ओ३म्

आदर्श रतन माला

अर्थात्

श्री [illegible]

॥ भजन रामायण ॥

ईश्वर प्रार्थना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ यजु० अ ३० । मं० ३

भजन १ ।

प्रभोजी मोहि भारी आश तुम्हार।

भव निधि बीच परो मम नैया करहु वेगि तेहि पार। प्रभो० ॥१॥
आदि अन्त नहिं ईश कहां तव, देखा दृष्टि पसार॥
अजर अमर अखिलेश अगोचर वर्णत हैं श्रुतिचार। प्रभो० ॥२॥
थल चर जल चर नभचरादि की रचना करी सम्हार॥
सकल विश्व उत्पादक ईश्वर, करहु धर्म प्रचार। प्रभो० ॥३॥
हरहु शीघ्र त्रयताप दयामय, हे प्रभु जगदाधार॥
ख्यालीराम कहे कर जोरी हूं मतिमन्द अपार। प्रभो० ॥४॥

वार्ता २।

प्रिय पाठक वृन्द! आप की सेवा में मर्य्यादा पुरुषोत्तम महाराजा रामचन्द्र तथा बालयती लक्ष्मण व जानकी जी का अपूर्व आदर्श प्रस्तुत करता हूं आशा है कि आप इससे कुछ न कुछ अवश्य ही शिक्षा ग्रहण कर लाभ उठावेंगे यही मेरी प्रार्थना है।

जसवन्तसिंह बुकसेलर अलीगढ़ ने बाबू रघुवरदयाल के प्रबन्ध से 'सुरेन्द्र प्रेस' अलीगढ़ में छपवाकर प्रकाशित की।

दोहा ३ ।

कौशल्या माता भई, जगमें परम अनूप ।
तासु पुत्र श्री रामजू, भये आर्य्य कुल भूप ॥
सीता सुमति सुशीलता, सब जग में विख्यात ।
जिहि चरित्र उपमा लिखत, कविजन मनसुकुचात ॥

वार्ता ४ ।

उपरोक्त दोहों से आप को ज्ञात हो गया होगा कि हमारे देश में कौशल्या जैसी माता हुई जिन्हों के महाराज रामचन्द्र जैसे पुत्र रत्न उत्पन्न हुए और जिनके सुदृढ़ धारी धर्म भक्त महाराज भरत व लक्ष्मण जैसे भ्रात हुए और सीता जैसी विदुषी (जिन्हों ने अत्यन्त घोर कष्ट सहकर भी अपना पतिवृत धर्म नहीं छोड़ा) पत्नी हुई जैसा कि आगे चलकर आपको सब विदित हो जावेगा ।

निवेदक—ख्यालीराम ।

गज़ल ५ ।

हुए दशरथ के सुत रघुवर, शर नर हो तो ऐसा हो ।
करी स्वीकार पितु आज्ञा, पुत्र गर हो तो ऐसा हो ॥
इन्होंने क्या किया ?
गये सब छोड़ राजो धन, उठा कर रुख़ वो सिम्ते वन ।
किया मैला न कुछ भी मन, जो साबिर हो तो ऐसा हो । हुए०

वार्ता ६ ।

जिस समय सारी अयोध्या में धूम थी कि कल को श्री महाराजा रामचन्द्रजी को राज्य तिलकोत्सव होगा परन्तु उनकी यह आशा निष्फल हुई और राज्य के बदले वन मिला केकेई जैसी कुटिल स्त्री ने मंथरा के सिखाने से महाराज दशरथ से श्री रामचन्द्र को वनवास का वर मांगा और ऐसा ही हुआ ।

केकई दशरथ से वरदान मांगती है।

चौपाई।

सुनहु प्राणपति भावत जीका। भरतहिं देहु एक वर टीका।
दूसर वर माँगो कर जोरी। पुज बहु नाथ मनोरथ मोरी॥

प्रथम वर में अपने पुत्र भरत को राज्य तिलक चाहती हूं और दूसरा वर रामचन्द्र को बनवास मांगना है।

तापस वेप विशेष उदासी। चौदह वर्ष राम बनवासी॥

गजल ७।

कहै रानी यों राजा से, मोहि वर आप यह दीजे।
कहूं मैं सत्य अब तुम से, न देरी इसमें कुछ कीजे॥
भरत को राज्य होवेगा, यही दिल ठानली मैंने।
वो जावें रामचन्द्र वनको, यही वरदान मोहि दीजे॥

वार्ता ८।

केकई की यह बातें सुन दशरथ ने विवश होकर यही वरदान उसको दिये कारण कि प्रथम प्रतिज्ञा कर चुके थे और उन के यहां का प्रण था (रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जांय पर वचन न जाई) और जिस समय रामचन्द्र जी राज्य भवन में आये और पिता को शोकातुर देख केकई से कारण पूंछने लगे तब केकई कहती है कि मैंने राजा से आज यह वर माँगा है कि भरत को राज्य हो और राम को चौदह (१४) वर्ष का बनवास यह सुनकर राजा को अत्यन्त शोक प्राप्त हुआ है तब महाराज रामचन्द्र कहते हैं कि मुझको जो माता पिता आज्ञा देंगे वही स्वीकार है भरतजी को राज्य तिलक हो इससे बढ़ कर मुझको और क्या हर्ष होगा (धन्य है) और पुत्र का धर्म है कि माता पिता की आज्ञा का पालन करें॥

चौपाई ।

सुन जननी सोहि सुत बड़ भागी । जो पितु मात वचन अनुरागी ।
तनय मातु पितु पोषण हारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ॥
भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू । यह विधि मोहि सन्मुख आजू ।
जो न जाउं वन ऐसेहु काजा । प्रथम गिनेहु मोहि मूढ़ समाजा ॥

वार्ता ६ ।

इतने वचन केकई से कहकर माता कौशल्या के समीप वन जाने की आज्ञा मांगने के हेतु गए पुत्र के ऐसे वाक्य सुन कर कौशल्या अत्यन्त अधीर हुई और इस प्रकार कहने लगी ।

चौपाई ।

धरि धीरज सुत वदन निहारी । गद्‌गद वचन कहित महतारी ॥
तात पितहि तुम प्राण पियारे । देख मुदित नित चरित्र तुम्हारे ॥
राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा । कहेहु जान वन केहि अपराधा ॥

वार्ता १० ।

जब कौशल्या रामचन्द्रजी से इस भांति कहती हैं तब श्रीराम माता को उत्तर देते हैं कि मैं तो माता पिता दोनों ही का आज्ञाकारी हूं मुझको पिता ने आज्ञा दी वह मैंने शिर धारली ।

ग़ज़ल ११ ।

है पिता माता का यह बन्दा तो तावेदारजी ।
चाहे जो मेरा करो इस का तुम्हे अख़्त्यारजी ॥
यह बदन है आपका चाहे बेचलो बाज़ार में ।
पर नहीं मुझको ज़रा इस बात से इंकारजी ॥
वन गवन के वास्ते आज्ञा है पितु की तुम सुनो ।
यदि वचन मानूं नहीं तो मुझको अति धिक्कारजी ॥
जो पिता माता की आज्ञा पुत्र जन करते नहीं ।
हैं अधम नहिं धर्म उनका जीवना दुश्वार जी ॥

इसलिये होकर के निर्भय मुझको आज्ञा दीजिये।
राम नहिं हरगिज़ रहैं चलने को अब तैयार जी॥
(कौशल्या धैर्य्य धरकर आज्ञा देती हैं)

ग़ज़ल १२।

हरश तेरे बिना लालन मुझे नहिं चैन आवेगा।
छोड़ कर वृद्धि माता को जो वन को आज जावेगा॥
करूं किस तौर से प्यारा न मन को धीर बंधता है।
आज तेरे बिना सूना महल मुझ को दिखावेगा॥
हानि इसमें नहीं कुछ भी पिता आज्ञाको शिर धारो।
वचन पितु मात मानै से परम पद को सिधारेगा॥
मोह तजिकर के वन जावो सुनो अय पुत्र अब मेरी।
तो ख्यालीराम कहैं सचही सुयश दुनियां में पावेगा॥
(और भी कहती हैं)

भजन १३।

टेक—अरे सुत सुन धर ध्यान—मान बात जा वनको।
मानो सुत वचन हमारे—है येही कर्म तुम्हारे॥
न दूसर धर्म्म महान—मान बात०॥ १॥
तुम मानो मेरी बानी—नहिं वन जाने से हानी।
कहो सच मेरी जान—मान बात०॥ २॥
है सत्य यह तेरा कहना—जा खुशी से वन में रहना।
नहीं होगा अपमान—मान बात०॥ ३॥
यों ख्यालीराम समझाता—ऐसे ही कह रही माता
आगे सुनो बयान—मान बात०॥ ४॥

वार्ता १४।

जिस समय कौशल्या ऐसे कह रहीं थी तभी जानकी जी को श्री रामचन्द्रजी का वन जाने का समाचार विदित हुआ।

दोहा ।

दो०—समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय ।
आय सासु पग कमल युग, बंदि बैठि शिर नाय ॥
तब क्या कहती हैं ।

चौपाई ।

तब जानुकी सास पग लागी । सुनिये मातु मैं परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा । मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जिन छांड़ब छोहू । कर्म कठिन कछु दोष न मोहूं ॥

भजन १५ ।

टेक—सुनो सासू चितलाय, खुश हो आज्ञा दीजे ।
हैं नाथ यह प्राण पियारे, सुख मूल जगत में म्हारे ।
कहूं मैं सत्य सुनाय, खुश हो० ॥ १ ॥
बिन पती न जग में रहना, रहूं साथ दुःख पड़े सहना ।
करूं सेवा मन लाय खुश हो० ॥ २ ॥
शास्त्रों में आज्ञा जारी, रहे पत्नी आज्ञाकारी ।
धर्म्म नहिं जांय नसाय, खुश हो० ॥ ३ ॥
कहैं ख्यालीराम यों सीया, कह रही उमँग रहा हीया ।
दुःख में रही है छाय, खुश हो० ॥ ४ ॥

वार्ता १६ ।

जब सीताजी ने इस प्रकार कौशल्या से प्रार्थना की तो कौशल्या ने सीता जी को अनेक प्रकार से समझाया और समझाने से भी नहीं मानतीं तो कौशल्या विचार करती हैं. कि अब यह बिना बन को जाये नहीं रहैगी और मेरा उपदेश निरर्थक है तब सहर्ष आज्ञा देती हैं ।

चौपाई ।

अचल जिहोउ सुहाग तुम्हारा । जब लग गँग यमुन जल धारा ॥

वार्ता नं० १७।

कौशल्या कहने लगीं कि हे सिये मैं तुमको आज्ञा देती हूं और मेरी यह अशीस है कि तुम्हारा सुहाग तब तक रहे जब तक गँगा यमुना में जल रहे। और सर्व प्रकार से सौभाग्यवती हो तब यह आज्ञा पाकर रामचन्द्रजी के पास हाथ जोड़ निम्नाँकित प्रार्थना करने लगी।

दोहा।

रामचन्द्र वन चलन को, जब तक हुए तैयार।
सीताजी ता समय पर, ऐसे कहैं उचार॥

लावनी १८।

मैं घर में रहूं किस तरह पतीव्रत खोई।
वन चले राम और लषन जानकी रोई॥
मम ससुर अवधपति पिता जनक जग जानत।
पति भानुवँश अवतँश मुनिन मन भावत॥
हैं सास गुणन की खानि माहि दुलरावत।
आई यह सुख में विपति दुःख दरसावत॥
तुम चलन चहत पति देऊं प्राण मैं खोई। वन०

चौपाई।

भोग रोग सम भूषण भारू। यम या तना सरिस सँसारू॥
प्राणनाथ तुम बिन जग माहीं। मो कहँ सुखद कँथ कोई नाहीं॥
जिय बिन देह नदी बन बारी। तैसेहि नाथ पुरुष बिन नारी॥
नाथ सकलसुख साथ तुम्हारे। शरद विमल विधुवदन निहारे॥

लावनी—मुझ को घर नहीं सुहाय कुटुम्ब नहिं भावे।
तुम बिन पति मुझको हाय रुलाई आवे॥
जैसे पानी बिन मीन पड़ी मुरझावे।
तैसे ही नारी भी बिना पुरुष दुःख पावे॥
है कर्म बड़ा बलवान करे क्या कोई। वन०।

करदे तपस्वी का भेष हाय पति मेरा।
कोमल फूलों सा बदन जाय नहिं हेरा॥
हैं जंगल महा कठोर विपत का घेरा।
लिये हाथ कमंडल करेंगे वन का फेरा॥
वृक्षन तर कांस विछाय रहैं नित सोई। वन०।
विधना का क्या मैं हरा विपति दिखलाई॥
सुख लिया हमारा छीन दया नहिं आई।
छोड़ूं मैं सब घर बार महा दुःख पाई॥
मैं चलूं आप के साथ करूं सेवकाई।
तहँ देख तुम्हारे चरण जाँय दुःख खोई। वन०।
क्या यही प्रीति की रीति नीति दरसावत।
क्या यही मुहब्बत प्यार मुझे समझावत॥
अब चले प्राणपति मुझे नहीं घर भावत।
मैं मरूं कटारी मार यही मन आवत॥
जो होनहार हो जाय होय फिर होई। वन०।

तथा और भी

दादरा—नहिं मानूं चलूंगी मैं वन को, पिया।

भोजन वस्त्र और आभूषण तुम बिन न भावें हैं मुझ को पिया। नहीं०। मात पिता मेरे की है आज्ञा कैसे मैं टालूंगी उसको पिया। नहीं०। केवल एक पती की पूजा। इससे और धर्म नहीं दूजा॥ हाथ जोर कर विनती करूं मैं छोड़ो न यहां पर मुझको पिया। नहीं०। ख्यालीराम कहैं जनक दुलारी; सामान चलने का सारा किया। नहीं०।

॥ दोहा ॥

सीताजी इस तरह से, पति से कहैं उचार।
राम चन्द्र समझावते, उन को बारम्बार॥

भजन १९।

टेक-सुनो तुम जनक दुलार, चलो न वन घर रहिये,
मानो तुम बात हमारी मति बन को चलिये प्यारी।
कहूं मैं बारम्बार चलो न० ॥१॥
महलों की रहने हारी वहां कष्ट पड़े अति भारी।
नहीं कुछ उनकी शुमार, चलो न० ॥२॥
वहां हिंसक पशु रहते हैं, लखि मनुज चोट करते हैं।
सुनत दुःख होय अपार चलो न० ॥३॥
जो ख्यालीराम जाओगी तो जाकर पछताओगी।
नित्त हावेगी ख्वार, चलो न० ॥४॥

(और भी समझाते हैं)

भजन २०।

टेक-मान सच लीजिये जी, नहीं वन जाने से लाभ।
भूषण वस्त्र त्याग के वहां पर वलकल पहिनो प्यारी॥
भोजनादि समान वहां वन की हो वस्तु सारी, मान०॥१॥
याद करो अब रंगमहल की तुमको अति दुख होय।
वनके पत्र बिछाकर प्यारी सोना होगा तोय, मान० ॥२॥
जो सुख राज्य भवन में मिल रहे सो वहां स्वप्न दिखाय।
इससे मानो सीख हमारी रहो महल हर्षाय, मान०॥३॥
राज्य पाट धनधाम छोड़ कर मत चलने की ठान।
ख्यालीराम वनजाके तुमको होगा कष्ट महान, मान०॥४॥

(तथा और भी)

दादरा २१।

मानो वचन हमार जी घर रहिये न चलिये।
राज्य महल के सुख तजि प्यारी, सहो न दुख अपारजी, घर०॥
वन में जाय दुःख अति पाओ, राह चलत जाओ हारजी, घर०।
वहाँ जाय फिर ऐसे कहि हो, कहा रची करतारजी, घर० ॥

बार२ समझाऊं तुमको, आगे तुम्हें अख़्यार जी, घर० ॥
मेरी इस शिक्षा से तुमको, सुःख मिले बहुबार जी, घर० ॥
ख्यालीराम कहैं मानो भामिन. पल २ होत अवार जी, घर० ॥
तब जानकी जी क्या उत्तर देती हैं ।

दादरा २२ ।

सुनिये प्राण अधार जी इस दासी की विनती ।
जो कुछ कहा आपने सच है, पर कुछ करो विचार जी ॥इस०॥
श्रुति स्मृतियों की आज्ञा का, पालन करूं भरतार जी ॥इस०॥
पति सेवा में चित हित देना, यही है धर्म हमार जी, ॥इस०॥
पति तज करै आनि सेवकाई कहैं उन्हें अधम पुकारजी, ॥इस०॥
ऐसी अधम त्रिया का जग में टुक जीवन धिक्कारजी, ॥इस०॥
ख्यालीराम कहैं पति सेवाका, सयन मिलन दुशवारजी ॥इस०॥

भजन २३ ।

(इसी प्रकार और भी कहनी हैं)

टेक-चलूं वनको महाराज, करूं टहल मन लाके,
यदि मुझे न ले जाओगे. तो ज़िन्दा नहिं पाओगे,
कहूं मैं तुम से आज-करूं ॥१॥
बिन तुम्हारे प्राण गवाऊं, और तुमको सत्य सुनाऊं,
सुनो मेरे सरताज—करूं ॥२॥
कर सेवा पति की नारी वह रहती सदा सुखारी,
न बिगड़ें उनके काज-करूं ॥३॥
यह मात पिता की बानी, करूं पति सेवा मनमानी,
ये मेरे कुल की लाज-करूं ॥४॥
मुझे माता ने सिख दीनी, सो भंग आज्ञा कीनी,
है मोहि यही लिहाज़-करूं ॥५॥
मर रहे नारि बिनु स्वामी, वह होय नर्क अनुगामी,
सुनो रघु तिलक जहाज-करूं ॥६॥

जहां थको राह के मारे, वहां दावूं चरण तिहारे,
यही सेवक का काज, करूं ॥७॥
कहैं ख्यालीराम सुनो भाई, अब आगे की कविताई,
जो सज्जन रहे विरांज, करूं ॥८॥
पश्चात् श्रीराम फिर समझाते हैं।

क़व्वाली।

कही मानों प्रिये सीता, न वन चलने की दिल ठानों।
सहो संकट वहां भारी, सत्य मम बात तुम जानों॥
पशु जो वहां पर आवेंगे, सामने ही दहाड़ेंगे,।
ख़ता विन जीव निर्बल को, वहां पर आ पछाड़ेंगे॥

॥ चौपाई ॥

कानन कठिन घोर भयकारी, घोर घाम वर्षा होय भारी।
भालु व्याघ्र वृक केहरि नागा, करहिं नाद सुन धीरज भागा॥

॥ कव्वाली ॥

सहो सर्दी व गर्मी भी, और दुःख लाख तुम झेलो।
और भी भालु व्याघ्रादिक की दहशत होगी सचमानो॥

॥ चौपाई ॥

रहो भवन अस हृदय विचारी, चन्द्र वदन दुःख कानन भारी।
आयुस मोर सासु सेवकाई, सब विध भामिन लेहु भलाई॥
याते और धर्म नहिं दूजा, सादर सासु ससुर पद पूजा।
जब २ करहिं मात सुध मोरी, होंहिं प्रेमवश विकल बहारी॥
तब २ तुम कहि कथा पुरानी, सुन्दर समझावहु मृदुवानी।
(तथा और भी)

॥ गज़ल ॥

मानिले भामिन कही वन, मत चले सुख मार जी।
संग नहिं चलिये कहन मेरी का कर इतबारजी॥

सास की सेवा जो करे हित चित से जो कोई कामिनी ।
जाँय सीधी स्वर्ग को उनका ही बेड़ा पारजी ॥
घर मेरे माता पिता की टहल तुम निशि दिन करो ।
गर चलोगी संग से तो यश मिले संसार जी ॥
तुम तो राजा की सुता हो बन में जा घबराओगी ।
इससे मानो कहन नहिं मुझको करो लाचारजी ॥
जो न देखे होंगे तुमने दुःख वह देखो वहां ।
राम नहिं समझा सके तुम होगी खुद हुशियारी जी ॥

॥ वार्ता ॥

जब जानकी क्या कहती हैं

प्यारे पाठको ! महाराजा रामचन्द्र से सीताजी इस प्रकार कहती हैं कि हे प्राणनाथ मुझको बिना तुम्हारे यहां एक क्षण भी रहना स्वीकार नहीं है जहां ऐसा अगाध पतिव्रत धर्म सीताजी के मन में भरा था वहां आज कल की दशा देखने से ज्ञात होता है कि हे सीता धन्य है और धन्य तेरे पतिव्रत धर्म पर आरूढ़ साहस को और फिर भी रामचन्द्र जी इतनी बातें सुनकर अनेक प्रकार से समझाते हैं परन्तु उनके समझाने से कुछ भी फल नहीं हुआ और जितना उन्हें समझाते हैं उतना ही उनको पतिव्रत धर्म का जोश बढ़ता जाता है पश्चात् अन्तिम प्रार्थना इस प्रकार करती हैं वह भजन द्वारा सुनिये ।

निवेदक—ख्यालीराम ।

गजल

कहो चाहे लाख अब मुझ से, न रहना यहां गवारी है ।
चलूं मैं साथ ही बनको, यही दिल में विचारी है ॥
मिलें जहां दर्श पति तुम्हारे, मुझे वहां सुख अति होंगे ।
करो स्वीकार दासी की, विनय यह तौ हमारी है ॥
पती सेवा के सम दूसर, न तप है और त्रिया का ।

उन्हें जानो अधम नारी, जिन्हें दौलत प्यारी है ॥
जो मारग हैं कठिन बन के, वह फूलों के हैं सम मुझको।
जहां जाओ वहीं पर संग, ये दासी तुम्हारी है ॥
बिना तुम्हरे नहीं यहां पर, रहेगी मेरी परछांहीं।
प्रभू अब सत्य ही तुम से, रही प्रीतम पुकारी है ॥

वार्ता

जब श्री रामचन्द्र ने जान लिया कि बारम्बार समझाने से भी जानकी अब यहां नहीं रहेंगी तब विवश होकर कहते हैं कि आपकी इच्छा वैसाही कीजिये सभ्य महोदयगण! सीताजी के अन्दर कैसा पतिवृत धर्म कूट २ कर भरा हुआ था जो उपरोक्त लेख से आप अवश्य जान सके हैं और वर्तमान समय की स्त्रियोंको उस सतीके चरित्रों से अवश्य शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये व्यर्थ रामलीला में जाने से कुछ लाभ नहीं होसकता

निवेदक—ख्यालीराम।

चौपाई

समाचार जब लक्ष्मण पाये। व्याकुल विकल बदन उठिधाये॥
कंप पुलक तनु नयन शरीरा। गहे चरण अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु उठेनहीं ठाढ़े। मीन दीन जनु जलते काढ़े॥
मो, कहं कहा कहब रघुनाथा। रखहहिं भवन कि लेहहिं साथा॥

लक्ष्मणजी रामचन्द्रजी से प्रार्थना कर और माता की आज्ञा पा वन को जाते हैं।

कव्वाली।

भ्राता बताओ मुझको, क्यों आप बन को जाते।
मुझको यहां ही छोड़ा, नयनों से जल बहाते ॥
अब तो अवध में रहना, लाज़िम नहीं है मुझ को।
बन ही को अब चलूंगा, नहिं देखूं दुःख पाते ॥
लक्ष्मण की सुनिये बानी, कहे राम सुनलो भाई।

माता पिता की सेवा, करिये क्यों दुःख उठाते ॥
धन धाम राज्य आदिक, मिट्टी के सम हैं मुझको ।
कर रूर के नाहीं मेरा, भ्राता क्यों दिल दुखाते ॥
जो तुम न मानते हो, तो साथ चलिये बेशक ।
यह सुन के भ्राता जाकर, माता को यों सुनाते ॥
माता ने सुन लक्ष्मण को, खुश हो के दीनी आज्ञा ।
सुन करके बात उनकी, लगते हैं सर झुकाते ॥

श्रीं रामचन्द्र लक्ष्मण व जानकी तीनों का वन को जाना और नग्र में शोक होना ।

धन धाम राज तजि के, वन के चलन की त्यारी ।
सब को प्रणाम करके होते हैं मन सुखारी ॥
नहीं ग़म है जिनके दिल में और धैर्य्यता धरें हैं ।
लेकिन पिता का कहना, करना था नियम भारी ॥
तजि करके मोह सबसे रास्ता है वन का लिया ।
पुर लोक देखते हैं, होते हैं अति दुखारी ॥

वार्ता

इस प्रकार अवध से प्रस्थान कर बनको चले और अनेक ऋषियों से मिलते हुए अत्रिमुनि ऋषि के आश्रम पर पहुंचे और अत्रमुनि ऋषिने श्रीरामचन्द्र को अनेक प्रकारके उपदेश दिये तत्पश्चात् ऋषि पत्नी अनसूया ने सीताजी को पतिव्रत धर्म पर कुछ उपदेश दिया जोकि रामायण की इन चौपाइयों से विदित होगा ।

* चौपाई *

कह ऋषि वधू सरल मृदुवानी । नारि धर्म्म कछु व्याज बखानी ॥
मातु पिता भ्राता हितकारी । मित सुखप्रद सुन राजकुमारी ॥
अमित दानि भर्त्ता वैदेही । अधम सो नारि जो सेवन तेही ॥
वृद्ध रोग बशजड़ धनहीना । अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥

ऐसेहु पतिकर कर अपमाना। नारि पाय यमपुर दुखनाना॥
एकै धर्म्म एक वृत नेमा। काय वचन मन पति पदप्रेमा॥

पश्चात अनसूया कहती हैं कि हे सीता जगत में चार प्रकार की पतिव्रता स्त्री होती हैं वह मैं तुमको बताती हूं कि जिसको सुनकर तुम्हें कुछ ज्ञान हो।

चार प्रकार की स्त्रियों के लक्षण

दोहा।

चारि तरह की पतिव्रता। जग में पड़े लखाय।
उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहूं समझाय॥

उत्तम के असबस मन मांहीं। सपनेहु आनि पुरुष जगमाहीं॥
मध्यम पर पति देखहिं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे॥
धर्म्मविचार समुझि कुल रहहीं। सो निकृष्ट तिय श्रुत अस कहहीं॥
बिनु अवसर भयते रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥
पति वंचक पर पति रति करई। रौरव नर्क कल्प शत परई॥
क्षण सुख लागि जन्मशतकोटी। दुःखनसमझैतेहिसमकोखोटी॥
बिनुश्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छांड़िछलगहई॥
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई। विधवा होय पाय तरुणाई॥

वार्ता

प्यारी महलाओ व बहिनों? आप उपरोक्त ऋषि पत्नि के वाक्यों को उर में न रख कर वृथा ही इधर उधर ईंट पत्थर भूत मसान इत्यादि पूजती और कृबों पर चद्दर चढ़ाती और शिर झुकाती फिरती हो व बनावटीव्रत जैसे भैयादौज करवा चौथ, शिव तेरस इत्यादि रह कर भूखों मरती हो, कहां तक कहा जाय यहां तक देखा गया है कि स्त्रियां अपने पतिसे ऐसे २ कठोर भाषण करती हैं कि जिनको सुन कर यही कहना पड़ता है कि हे अविद्या देवी तूने हमारे भारत वर्षको खूब ही नाच नचाया है शोक? कि वर्त्तमान समय की स्त्रियां पति

सेवा छोड़ ऐसा २ पूजा व्रतादि करें और प्राणपति प्रतिकूल वाक्य हैं, आशा है कि मेरे इस कथनसे आर्य्य देवियां अवश्य कुछ लाभ उठावेंगी और पतिव्रत धर्म को पालन कर इस लोक तथा परलोक में यश की भागी बनेंगी ।

दोहा ।

राम गये वन वास को, दशरथ तजा शरीर ।
भरत आए ननसाल से, लखि यह हुए अधीर ॥

वार्ता

जिस समय भरतजी शत्रुघ्न सहित ननसाल से अवध को आये और उनको यह समाचार विदित हुए कि श्री राम लक्ष्मण जानकी सहित वनको गये और उन्हीं के वियोग में महाराज दशरथने भी प्राण त्याग कर दिये तब अत्यन्त अधीर होकर अनेक प्रकार कल्पनायें करने लगे और कहने लगे कि माता कैकईने यह घोर अन्याय किया है कि मेरे राज्यके लोभ वश श्री रामचंद्र को वनवासी किया और फिर भी पिता का शोक हुआ तब इस प्रकार माता से कहते हैं :—

निवेदक ख्याली राम ।

॥ चौपाई ॥

पेड़ काटि तव पल्लव सींचा । मीन जियन हित वार उलींचा ।
धीरज धर उर लेहु उजासा । हा पापिन तू भई कुलनाशा ॥
जो अस कुमतिरही उर तोही । जनमत क्यों नहीं मारहु मोही ।
वर मांगत उर भई न पीरा । जरो न जीभ मुखपरेहुनकीरा ॥

तथा और भी क्या कहते हैं ।

॥ कव्वाली ॥

विना सिया राम के देखे । नहीं मुझको करारी है ।
मिले जब दर्श रघुवर के । कल्पना येही सारी है ॥
गये तजि राम क्यों यहां पर । यही चिन्ता है जो मुझको ॥
उठी रघुवंश में अग्नि । अवध सारी पजारी है ॥

कहाँ श्री राम कहाँ लक्ष्मण । कहाँ सीता सी देवी है ।
अरी माता तेरी करनी । सकल दुनियां से न्यारी है ॥

धन्य है ऐसे भाई को

नहीं था राज्य का भूखा । नहीं धरणी की थी ख्वाहिश ।
साथ श्री राम जी वन को । नहीं उर शोक भारी है ॥

तथा और भी

गजल थियेटर

अरी मात बैरी तूने ये क्या किया । श्रीरामको जो वनवास दिया । तूने लोभ के कारण यह अनरथ किया, हर हालत में मुझको पराजय किया ॥ श्रीराम लक्ष्मण और सीता हैं किधर, सूने महलों को देख फटे है जिगर । ज़रा यह तो बतादे कहां हैं किधर, याद करके उन्हें तड़पता है मेरा हिया ॥ अरी० ॥ तूने राम को जो ऐसा कष्ट दिया, खुद अपने ही कुलको नष्ट किया । जब तक देखूं न जाकर के राम जिया; धिक्कार है अवध में मेरा जिया ॥ अरी० ॥ वन जाते समय तो मिले थे तुझे, वह कारण बतादे ज़रा तो मुझे । मेरे हृदय की ज्वाला तो तबही बुझे, मुझे राम मिले ये विचार किया । अरी० ।

और भी क्या कहते हैं

चौपाई ।

जबते कुमति कुमति मन ठयऊ । खण्ड २ हृदय न गयऊ ॥
भूप प्रतीति तोर किमि कीन्हीं । मरण काल विधि मति हरलीन्हीं ॥
जे अनि अहित राम तेहु तोहीं । को तू अहसि सत्य कहु मोहीं ॥
जो हसि सो हसि मुंह मसि लाई । आंखि ओट उठि बैठहु जाई ॥

वार्त्ता

जब भरतजी इस प्रकार कह महल से आये और नगर निवासी विचार करने लगे कि भरतजी को राज्य सिंहासन ज़रूर होना

चाहिये क्योंकि राज्य सिंहासन नृपति शून्य कदापि नहीं होना चाहिये, परन्तु भरतजी माता तथा पुरवासियों के कहने पर भी अवध के चक्रवर्ती राज्य को स्वीकार नहीं करते धन्य है ऐसी महान आत्मा को कि जिनको राज्य की तनिक परवाह नहीं परन्तु आज कल तो एक एक फुट भूमि के ऊपर लड़ २ कर कट मरते हैं शोक !

भरतजी राज्य स्वीकार न कर क्या कहते हैं ।

चौपाई ।

यद्यपि यह समुझत हो हौनी के । तदपि होत परितोषन जीके ॥
अब तुम विनय मोर सुन लेहु । मोहि अनुहरत सिखावन देहु ॥

दोहा

पितु सुर पुर सिय राम बन, करन कहहु मोहि राज ।
यहित जानहु मोर हित, कै आपन बढ़ काज॥

चौपाई ।

हित हमार सिय पति सेवकाई । सो हर लीन्ह मातु कुटिलाई ॥
मैं अनुमान देख जगमांही । अब उपाय मोरे हित नाहीं ॥
शोक समाज राज्य केहि लेखे । लषण रामसिय पद बिनु देखे ॥
कहो सांच अब सुन यति याहू । चाहिये धर्म्म शील नरनाहू ॥
डर न मोहि जग कहै किपोचू । परलोकहु कर नहिं न शोचू ॥

दोहा

आपनि दारुण दीनता, सबहि कहो समुझाय ।
देखे बिन रघुवीर पद, जिय की जरन न जाय ॥

चौपाई ।

आन उपाय मोहि नहीं सूझै । को जिय की रघुवर बिन बूझै ॥
एकहि आंक यही मन माहीं । प्रातःकालि चलहो तेहि पाहीं ॥
यद्यपि मैं अनभुलहूं अपराधी । भई मोहि कारण सकल उपाधी ॥
तदपि शरण सन्मुख मोहि देखी । छमि सब करहहिं कृपाहै विशेखी॥

वार्ता

इस प्रकार भरतजी मन में विचार कर अनेक वन के कष्ट सहन कर श्रीरामचन्द्र से मिलने को चलदिये और जब उनके पास पहुंचे तो अनेक प्रकार से वार्तालाप हुए फिर भरत जी अत्यन्त व्याकुल होकर कहते हैं कि हे भ्राता मुझको यहां छोड़ कर आप यहां कष्ट सहन करते हो तब श्रीराम पूछते हैं कि अवध में तो कुशल है और पिता माता केकई की भी कुशल कहो यह सुन भरत जी कहते हैं कि आप के शोक में पिताजी ने तो शरीर त्याग दिया और कुशल क्या सुनाऊं पश्चात् श्रीरामचन्द्रजी बोले भाई पिता तो स्वर्ग को सिधार गये अब आप जाकर अवध का राज्य अत्यन्त योग्यता से कीजिये तब महाराज भरत कहते हैं कि प्रभो ! मैं राज्य का अधिकारी कदापि नहीं हो सकता, कारण कि मैं योग्य नहीं हूं द्वितीय प्रजा आप को ही चाहती है अतएव मुझको राज्य करना स्वीकार नहीं अन्त में श्रीराचन्द्रजीने भरत को अपनी खड़ाऊं दीं और विविध प्रकार से समझायकर अयोध्या को विदा किया और अपने भाई लक्ष्मण जानकी सहित विचरते २ पंचवटी पर निवास किया उसी समय रावण की बहिन (शूर्पणखा) वहां आई और बोली।

चौपाई

तुम सम पुरुष न मो सम नारी, यह संयोग विधिरचा विचारी।
मम अनुरूप पुरुष जगनाहीं, देख्यउं खोज लोक तिहुं माहीं॥
ताते अब तक रही कुवाँरी, मन माना कुछ तुमहिं निहारी॥

वार्ता

अतएव आप से प्रार्थना करती हूं कि आप दोनों में से कोई भी मुझको ग्रहण कीजिये तब श्रीरामचन्द्रजी ने उसे अनेक

प्रकार से समझाया जब समझाने पर भी उसे कुछ ज्ञान नहीं हुआ तो विवश होकर लक्ष्मणजी को आज्ञा दी कि इसके नाक तथा कान काट डालो जिससे कि यह चिन्ह कामवश स्त्रियों के लिये चिरस्थाई रहे यह सुन कर लक्ष्मणजी ने तुरन्त ही उसको नाक कान रहित करदी तब शूर्पणखा रावण पास जाय विलाप कर कर अपनी व्यथा कहने लगी कि दो तपस्वी सहित स्त्री के पंचवटी पर ठहरे हैं और उन्होंने मेरे विना अपराध नाक कान काट डाले हैं सुन कर रावण को अत्यन्त क्रोध हुआ और मता उपाया कि उनकी स्त्री को किसी प्रकार हरण करना चाहिये यह विचार मारीच को कपटमृग बना भेजा उसको देख सीताजी ने रामचन्द्र जी से कहा कि हे स्वामिन इस मृग की छाल अति सुन्दर है इससे आप को इस कार्य्य के लिये वाधित करती हूं कि कृपाकर शीघ्र ही मृगछाला लादीजिये तब सीताजी के आग्रह से रामचन्द्रजी तो मृग के पीछे गये पश्चात् सीता को रावण अकेली पा हर लेगया और जब सीताजी ने अपने को रावण के पंजे में फंसा देखा तो अत्यन्त दुःख किया और इस प्रकार विलाप करने लगीं ।

भजन

टेक-रही सीता दुःखपाय, रावण के वश होकर ।
क्यों तजी मोहि यहां स्वामी, हर लीये जात यह कामी ।
करे अब कौन सहाय-रावण के० ॥ १ ॥
लक्ष्मण नहिं दोष तुम्हारा, मैं फल पालीना सारा ।
रहे थे जो समझाय-रावण के० ॥ २ ॥
ईश्वर क्या समझ दिखाई, जो पति से मुझे छुड़ाई ।
दुःख यह सहा न जाय-रावण के० ॥ ३ ॥
सीता मग में रोती है, अंसुओं से मुख धोती है ।
शोक रहा मन में छाय-रावण के० ॥ ४ ॥

सुनि गृधराज यह बानी, उसने सीता पहचानी।
देख रहा निगह उठाय रावण के० ॥ ५ ॥
यों ख्यालीराम पद गाते, देखा रावण को आते।
कहै इस भांति सुनाय-रावण के० ॥ ६ ॥

दोहा-सीता अति व्याकुल हृदय, ढरे नैन से नीर।
निरखि दशा उस समय पर कहै जटायू वीर॥

(जटायू रावण को इस प्रकार समझाता है)

क़व्वाली

सिया हरके अरे रावण, बता क्या हाथ आवेगा।
करे विध्वंस गढ़ तेरा, खबर जब राम पावेगा॥
नहीं यह धर्म शूरों के, हरें जो और की पत्नी।
घुसे सब शूरता घर में, जो रघुवर आ दबावेगा॥
समझले सत्य तू दिल में, कहन मेरी को अय पापी।
न फल इसका मिले अच्छा, कलह की ज़ड़ जमावेगा॥
न रख सकता है सीता को, यों ख्यालीराम समझाते।
सहित परिवार के लंका, को तू पापी नसावेगा॥

वार्ता

जटायू ने रावण को अनेक प्रकार से समझाया परन्तु 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' रावण को भले बुरे का कुछ भी विचार न रहा और उसकी शिक्षा न मान सीता को रथ में बैठाय लंका को पयान किया और लंका में पहुंच सीता को अशोक वाटिका में टिकाय राक्षसियों को रक्षार्थ नियत कर अपने दरबार को चला गया यहां सीता को वह दुष्टा राक्षसी अनेक प्रकार के भय दिखाकर रावण की पटरानी बनने को बाध्य करती हैं परन्तु सीता जी कुछ भी उत्तर नहीं देती हैं तब समय पाय रावण अशोक वाटिका में आया और सीता को नग्न

तलवार दिखा धमकी दे कहता है कि या तो तू मेरी रानी बनना स्वीकार कर वरन ये तलवार और तेरा शिर होगा परन्तु सीता ने नग्न तलवार का कुछ भी भय न कर अत्यंत निर्भीकता और साहस से इस प्रकार उत्तर दिया ।

कव्वाली बहरतवील

अय रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का खौफ़ो ख़तर ही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी ख़ैर मना, तुझे होनी की अपने ख़बर ही नहीं ॥ क्या तू सोने की लंका का मान करे मेरे आगे वह मिट्टी का घर ही नहीं । मेरे दिल का सुमेरू हिलेगा नहीं मेरे मन में किसी का तो डर ही नहीं ॥ आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मित्र के सभी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरें । तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ तूने रानी वरी थीं घनी सी बता, क्या उन पर भी तुझको सवर ही नहीं । पर त्रिया पै तूने जो ध्यान दिया, क्या अधर्मी नरक का ख़तर ही नहीं ॥ मेरी चाह जो थी तेरे दिल में वसी क्यों न जीत स्वयंवर तू लाया मुझे था कौन शहर जो बतादे मुझे, जहां स्वयंवर की पहुंची ख़बर ही नहीं । जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा, जल्दी से राम पै मुझको दे तू पठा । कहे सीता वरना तू देखेगा क्या चन्दरोज़ में तेरा यह सर ही नहीं ॥

और भी क्या कहती हैं ।

गजल

कहें सीता अरे रावण, अक़ल बिगड़ी तुम्हारी है ।
कहा तेरे हाथ आवेगा, चला गर्दन कटारी है ॥
दिखाता कौन को धमकी, अरे राक्षस महा पापी ।
कहां गई तेग जब तुमरी हुई शादी हमारी है । २ ।

अठारह सहस्र तेरे रानी, सबर तोय तब भी नहीं आया
तके पर नार को रावण होयगा नर्क गामी है ॥ ३ ॥
किया सो तेह किया रावण राम पर दे पठा मुझको।
करो फिर राज्य वेखटके भोजदत्त कहैं पुकारी है ॥ ४ ॥

वार्ता

जब रावण समयाभाव के कारण चला गया तो सीताजी विचार करने लगीं कि हे ईश्वर मुझको शीघ्र ही इस दुष्ट के पंजे से निकाल और मेरा पवित्र धर्म दृढ़ राख यह विचार ही कर रही थीं कि समय पा रावण फिर आया और अनेक प्रकार निशङ्क हो उत्तर देती हैं।

चौपाई

शठ सूनेसि हरि लायहु मोही। अधम निर्लज्ज लाज नहिं तोही ॥

कव्वाली

अरे हट भाग्य शठ मूरख मुझे तू क्यों सताता है।
नहीं पाता है सुख वह जो किसी का दिल दुखाता है ॥
मुझे सूने से हर करके, तू लाया दुष्ट लंका में।
अरे परदार के ग्राहक; वृथा क्यों मुख चलाता है ॥
यह तेरा क्रोध सुन पापी, तुझे दुख ही जला देगा।
दिखा तलवार नंगी को, जो मुझको भय दिखाता है ॥
हुआ जिस दिन स्वयम्बर था, तो उस दिन कहां गयाथा तू
चली वहां पर तो कुछ भी ना, यहां शेखी जनाता है ॥
ख़बर जब राम सुन लेंगे; तेरा सब मान मर्दन कर।
तेरे बन्धन से ले जावें, धर्म से कुछ जो नाता है ॥
मेरे कहने से अय रावण, शीघ्र ही दे पठा मुझ को।
नहीं तो साथ लक्ष्मण ले, राम यहां प्रातः आता है ॥

यों ख्यालीराम कहैं सीता, बिविध प्रकार समझाती।
मगर जब खोटे दिन आवैं, तभी सब भूल जाता है॥

वार्ता—पश्चात् सीताजी इस प्रकार सोच करती हैं।

भजन

टेक—लंका में सोच कर सीता, अति रुदन मचाती हैं।
राक्षस उसको भय दिखाते, कोई तलवार दिखा डरपाते॥
रात दिना गम सहैं, नेत्र से नीर बहाती हैं। लंका में० ॥ १ ॥
एक दिन रावण वहां पर आया; सीता को अति त्रास दिखाया
सुन रावण के वचन क्रोध सीता दुख पाती हैं। लंका में० ॥ २ ॥
तूने से मुझ को हरलाया, ख़ौफ़ नेक नहिं तूने खाया।
जांय नर्क पत त्रिय गामी यों समझाती हैं। लंका में० ॥ ३ ॥
ख्यालीराम वह व्याकुल होतीं, निश दिन सोच नहीं दुख सोतीं
दे तू वीर पजार पेड़ (अशोक) के नीचे आती हैं। लंकामें० ॥४॥

मन्दोदरी का रावण को समझाना।

भजन

प्रियतम विनय करूं कर जोड़, सुनिये अर्ज़ी नाथ हमारी।
प्रीति जो सिय से थी भरतार, स्वयम्बर में क्यों आये हार॥
एकहु वहां नहिं चली तुम्हार, वीरता यहां पर आय निकारी।
प्रियतम० ॥ नहीं ये शूरों के हैं कर्म, पर त्रिया को हरण अधर्म।
तुम को नहीं रही कुछ शर्म, हरी किसने यह बुद्धि तुम्हारी॥
प्रियतम० ॥ सिया को लाये आप चुराय, किया है तुमने यह अन्याय। अब भी कहती हूं समझाय, सिया को देओ नहीं होगी ख्वारी ॥ प्रियतम० ॥ मानो ख्यालीराम की बात, प्रीतम [illegible] होत प्रभात। राम के जोड़ो जाकर हाथ, सीख प्यारी की है हितकारी ॥ प्रियतम० ॥

(तथा और भी)

भजन

कहै इस भांति उचार-मन्दोदरी रावण से ।

प्रीतम सीतहि हर लाये, यह तुमने पाप कमाये । सत्य कहती हूं सरकार-मन्दोदरी० ॥ १ ॥ जहां हुआ स्वयंम्वर भारी, वहां भूप जुड़े थे भारी, हँसी तहां भई तुम्हार-मन्दोदरी० ॥२॥ जब वहीं न सीता पाई, फिर क्यों हरली अन्याई । देउ उत्तर भरतार-मन्दोदरी० ॥ ३ ॥ सिया रामचन्द्र की चेरी, देउ फेर बिनय यह मेरी । यही है सत्य बिचार-मन्दोदरी० ॥ ४ ॥ जब गढ़ पर करें चढ़ाई, दें लंक को धूल मिलाई । जीतना है दुशवार-मन्दोदरी० ॥ ५ ॥ कहैं ख्यालीराम आवें, निश्चर सब प्राण बचावें । मचेगा हाहाकार-मन्दोदरी० ॥ ६ ॥

कव्वाली बहरतबील

पीय सीता को लेके मिलो राम से, बिन मिले अब तो होगी गुज़र ही नहीं । करके कोप युगल भ्रात लंका चढ़े, दिन में रज भी होगा नज़र हो नहीं । प्यारे प्रीतम हमारे सुनो गौर कर, बात मेरी पै लाते असर ही नहीं । ख्यालीराम तुम्हारी अजय होयगी, इस में बिलकुल भी जानो कसर ही नहीं ॥

दादरा

प्रीतम प्राण अधारजी-जाय सीता को दे दो ॥
उचित नहीं तुम को यह स्वामी, राखो पराई नारजी-जाय०॥
परत्रिय हरण दोष अति भाख्यो, देखो शास्त्र मंझारजी-जाय०॥
ख्यालीराम की शिक्षा मानो, होजाय बेड़ा पार जी-जाय० ॥

(इसी भांति भाई बिभीषण समझाते हैं)

वार्ता

बिभीषण नीति अनुसार रावण को अनेक प्रकार से समझाते

हैं परन्तु कामवश महापापी दुष्ट रावण की समझ में एक बात भी नहीं आती और भाई को दुरवाक्य कहकर निकालता है।

ग़ज़ल

कहे रावण अरे पापी, कहा तैं गुल मचाया है।
प्रशंसा शत्रु की करना, न मेरा ख़ौफ़ खाया है॥
यह तेरी नीति सुन शठ रे, न मुझ को एक भी भाती।
करूं मैं दृष्टि से तुझ को, अलग यह दिल में भाया है॥
जान लिया है अब मैंने, कि तेरी मृत्यु आ पहुंची।
करे गुण गान वैरी के, न जाने किन सिखाया है॥
जो चाहे ज़िन्दगी अपनी, न मुंह अब मुझ को तू दिखला।
चलाजा पास उस ही के, कि जिस का यश तै गाया है॥
"ख्यालीराम" क्या मुझसे, बली जो करता है ज़ाहिर।
निकालूं बहिन का बदला, यह मौक़ा मैंने पाया है।
(यह सुन विभीषण रामचन्द्र के पास जाते हैं)

ग़ज़ल

सुने कटु वाक्य रावण के, क्रोध अति दिल में आता है।
चलूं अब पास रघुवर के, यह कहकर वहां से जाता है॥
है पापी नीच महारावण, सीख मेरी से है नफ़रत।
जान लीया है अब हमने, काल सिर पर दिखाता है॥
कहा जो मुझ से जातू वहां, कि जिस का यश बखाने है।
सुदृढ़धारीधर्म पुरुषों का, कहो यश कौन गाता है॥
यह ख्यालीराम उसने कुल, व्यथा जा राम से कहदी।
उसे अपनाया रघुवर ने, हुकुम पा सिर नवाता है॥

वार्ता

जब विभीषण श्रीरामचन्द्र से जा मिला तब रावण का सब

भेद पाय रामचन्द्रजी ने लंका को प्रस्थान कर दिया और समर आरूढ़ होकर गढ़ पर चढ़ाई प्रारम्भ करदी और अनेक प्रकार से युद्ध हुआ मेघनाद और लक्ष्मण से युद्ध होने पर मेघनाद की शक्ति लक्ष्मण को कुछ हानिकारक हुई जिसके लगते ही लक्ष्मणजी मूर्छित होगये और जब यह समाचार महाराजा रामचन्द्र को विदित हुआ तो भाई की शर्व को देखकर अत्यन्त विलाप कर न किया जो निम्न लिखित भजनों से भली भांति ज्ञात होगा।

निवेदक—ख्यालीराम।

ग़ज़ल।

दग़ा देकर चला लछमन अकेला छोड़ कर बन में।
न मानी कहन भ्राता की जा भिड़ा असुर के दल में ॥१॥
घर जाऊँ पूछेगी मैया कहां है लक्ष्मण सा भैया।
और कुछ माहि नां सूझै हलाहल खा मरूं छिनमें ॥२॥
कहां तेरे चोट लगी भ्राता नज़र कोई घाव नहीं आता।
उठो निक मुख से बोलो तो कहां शक्ती लगी तन में ॥३॥
नहीं गढ़ लंक को ढाह्यो नहीं सीता को मैं पायौ।
रह्यो मन मेरे पछतायो नहीं रावण हनों रन में ॥४॥ दग़ा

ग़ज़ल।

भ्राता जगा के तुझको, गोदी में हां उठालूं।
मुख देखकर के प्यारे, दिलको सबर न होता।
गर हो ज़खम कारी, तो वैद्य को बुलालूं ॥
बेहोश क्यों पड़ा है, ए भ्रात मुझको बतला।
नैनों के तारे प्यारे, उठ बैठ मैं बुलालूं ॥
तेरे बदन को क्योंकर, ग़फ़लत हुई है ऐसी।
समझादे मुझको सारी, जिससे कि ग़म को टालूं ॥
तेरे बिना है मुझको, सूना यह जग दिखाता।

या तो सुनादे बानी, नहीं जिस्मको जलालूं ॥
कहे ख्यालीराम भाई, मुझ से हर्ष से मिलले ।
तू ही बतादे कैसे, पितुमात आज्ञा पालूं ॥

बहरतबील क़व्वाली

मेरे भ्राता न धीरज है मुझको बंधे, जरा उठकर दिलासा बंधातो सही । तेरा भ्राता विकल रोता निर्दई खड़ा, ज़रा फिर कर के सूरत दिखातो सही ॥ हुआ तुझको क्या ऐसा अरे लाड़िले, दुःख अपना तू मुझको सुना तो सही । ख्यालीराम कहैं मेरे प्यारे बिरन, पीर अपनी तू मुझको बता तो सही ॥

भजन

टेक–उठकर जागियोरे तेरा भ्रात खड़ा रोवे है ।
मेरे कारण लक्ष्मण तुमने, झेले कष्ट महान ॥
क्या दुःख देने ही के लिये, यह ठानी थी ठान ॥ उठ० ॥
मेरे ही लिये तुमने छोड़े, राजपाट पितुमात ।
जिसका उऋण मैं नहीं होसक्ता, यह है सांची बात ॥ उठ० ॥
जो मैं जानता बन्धु छुटेगा, जाकर के अति दूर ।
तो नहिं पिता कहन को हरगिज़ करता मैं मंजूर ॥ उठ० ॥
राजपाट धनदारा आदिक, यह तो सब मिलजाय ।
तुमसा भ्राता नहिं मिलने का, लाखन करूं उपाय ॥ उठ० ॥
जब उत्तर मांगेगी मुझ से, मैया तेरी मात ।
क्या उत्तर दूं उसको मैंने, खोदिया प्यारा भ्रात ॥ उठ० ॥
लाखों चाहे जन्म धरूं पर, मिले न तुमसा वीर ।
ऐसी अक़ल बतादे मुझको, जिससे हो दिल धीर ॥ उठ० ॥
हनूमान बूंटी नालाये, वह भी गये मो से रूठ ॥ उठ० ॥
बिना वीर तेरे दर्शन के प्राण जाय मेरे छूट ॥ उठ० ॥

लक्ष्मण को राम तब उसी समय, पर हनुमत पहुंचे आय ।
लाय संजीवन दीना उनको, उठे लखन हर्षाय ॥ ३०॥

गजल वही पूर्व की

हुए दशरथ के सुत रघुबर, शेर नर हो तो ऐसा हो)
गईं थीं जानकी भी संग, छुड़ाया उनको रावण से ,
जो पत्नी हो तो ऐसी हो, जो शौहर हो तो ऐसा हो ॥
न पहुँचानी गलेमाला, कि अब पूछा था लक्ष्मण से ,
जो भाभी हो तो ऐसी हो, जो देवर हो तो ऐसा हो ॥
भरत ने राज्य तजि दीना, दिया जो उनको माता ने ,
दिया वापिस रामचन्द्र को, बिरादर हो तो ऐसा हो ॥
हुकूमत राम ने जब की, धर्म से कर प्रजा पालन ,
नया हुआ राज्य पालोना, मुकद्दर हो तो ऐसा हो ॥
मुकद्दर कर्म अफ़ज़ल थे, जो ये बातें हुईं हासिल ,
भयंकर राह सब काटी, दिलावर हो तो ऐसा हो ॥

इति आदर्श रत्नमाला समाप्त

इस अकेली को पढ़कर अँग्रेज़ी बोलना चिट्ठी पत्री लिखना यह सब सीखलो, इस में सब प्रकार के कई हज़ारं महावरे के शब्द और सब महकमों की बोलचाल के फ़िकरे अर्थ के भेद ऐसी सुगम रीति से समझाये हैं कि छः महीने में मिडिलपास की लयाक़त हो जाय मंगाकर देखो, दूसरी पुस्तकों से मुक़ाबिला करलो अगर सब से अच्छी हो तो रक्खो नहीं वापिस कर के दाम मंगालो शर्त यह है मूल्य १) उर्दू का १) डाक महसूल ≈)

आल्हा रामायण सातों काण्ड

यदि आप को राम चरित्र आल्हा छन्द में पढ़ने की इच्छा हो तो हमारे यहां सातों काण्ड तैयार हैं और ऐसे मनोहर हैं कि पढ़ते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है रामचन्द्रजी की पितृभक्त भरत का भाईपन, लक्ष्मणजी की सेवा, जानकी जी का पतिव्रत महावीर जी का पराक्रम पुण्य वा पुण्य और आल्हा ऐसे ग्रन्थ को आप लेने से कदापि न चूकिये मूल्य ।॥)
जल्दी करो वरना फिर इतनी क़ीमत में यह ग्रन्थ नहीं मिलेगा

सचित्र कोकशास्त्र

लीजिये रसिक महाशयो ! यह वही गुप्त ग्रन्थ है जिस की खोज में आप बहुत समय से थे एक सज्जन ने इसको अत्यन्त परिश्रम और धन व्यय करके छपवाया है इसमें स्त्री पुरुष के भेद लक्षण, सहवास और गर्भाधान के नियम, रक्षा और पहचान मन चाही सन्तान उत्पन्न करने की रीति, स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों की औषधि, चिकित्सा और निदान इत्यादि अनेक परम उपयोगी विषयों सहित जो लिखने में नहीं आ सकते मूल्य सिर्फ १) उर्दू १) डाक महसूल ≈)

स्त्री सुबोधनी

(स्त्री शिक्षा का सबसे बड़ा जगत प्रसिद्ध पुस्तक)

स्त्री शिक्षा का आज कल बड़ा अभाव है, जो थोड़ी बहुत पढ़ी भी हैं वह उपन्यास आदि पढ़कर समय को वृथा नष्ट करतीं व स्त्रीसुधार में बाधक होती हैं। इन तमाम बातों का ध्यान रखकर "स्त्री सुबोधिनी" नामक पुस्तक छपाई गई है। इसमें गृहस्थ धर्म, सामान्य शिक्षा, घर का काम धंधा, गृहकार्य और व्यय आदि का प्रबन्ध करना, भोजन संस्कार सीना पिरोना शिल्प विद्या, चित्रकारी, गर्भ रक्षा धात्री शिक्षा, स्त्री चिकित्सा स्वास्थ्य रक्षा, बाल पोषण, बालचिकित्सा, बाल शिक्षा, धर्म उपदेश, नीति त्योहार व्रत, इत्यादि स्त्रीउपयोगी समस्त कर्तव्यों का वर्णन ऐसी सरल भाषा में किया है जिस से हमारी कम पढ़ी बहिनें भली प्रकार पढ़कर लाभ उठा सकती हैं पुस्तक बहुत मोटे अक्षरों में उत्तम डबल कागज़ पर छपी है मूल्य१) सजिल्द।

रागसाज संग्रह

गाने की नई अद्भुत पुस्तक

इस पुस्तक में धुरपद, तराना, पद भजन, ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल कव्वाली, थियेटर वगैरा की सब नई चीज़ संग्रह कर के लिखी गई हैं इस में ४ भाग हैं और चारों भाग का मूल्य ॥।)

किस्सा तोता मैना आठों भाग

यह कहानी अपने ढंग की निराली ही है इस में तोता ने बदकार स्त्रियों के दोष, चालाकियों व जाल आदि की बातें कहानी के रूप में कही हैं और इसी तरह मैना ने पुरुषों की चालाकियों का वर्णन किया है अन्त में तोता के साथ मैना का विवाह हुआ है इस पुस्तक को पढ़कर स्त्री पुरुष दोनों शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य ॥) डाक महसूल ≡)

इन्द्रजाल चारों भाग

इस में वशीकरण मारण, मोहन, उच्चाटन, यंत्र, तंत्र, औषधि आदि अनेक विषय हैं। मूल्य ॥) डाक महसूल ≠)

व्यंजन प्रकाश

इस पुस्तक में भोजन बनाने की और अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवान एवं अचार मुरब्बे आदि की विधि लिखी है मू० ।≈)

रामलीला नाटक सातों काण्ड का सार

गोस्वामी तुलसीकृत रामायण के आधार पर सम्पूर्ण रामायण अनेक राग रागनी, दोहा, छन्द, रेखता, ग़ज़ल, दादरा, चौपाई, ठुमरी, झंझोटी, पद, लावनी, सवैया कवित, भजन और वार्ता आदि में वर्णन की हैं मूल्य १) डाक म० ≡)

हारमोनियम शिक्षक दोनों भाग

इस पुस्तक में कई प्रकार की ग़ज़ल, कव्वाली, भजन, दादरा और बहुतसी सरगम आदि हारमोनियम से बजाने की सुगम रीति बतलाई है इतना होने पर भी पुस्तक का मूल्य केवल ।≈) रक्खा है डाक खर्च ≡)